

शिवमाधवया
 इमेया
 पितृभया
 क्षान्तिस्तदव

मतापूजासासुत ॥
 निर्वृद्ध्यापूजाविधि
 निर्वृद्धमनुष्यध्यायित
 नात्मायै नमः नमः

यसासुतीस
 एआयासुत
 ५, एदनाथमन

हिलमाधवया
इमंया
पिवनया
शानक्ति सदन

मतापूजासासूत ॥
निर्वोदियापूजाविधि
निर्वोदमन्त्रमुखाधिस
वाक्तायेनममेव

यसासूनीस
होआयासरे
५, सुदनाथमन

२०८ नमः॥ ॥ आसन पूजा ॥ हंसा स्त्राय पादकी॥
वृषा स्त्राय पादकी॥ मयूना स्त्राय पादकी॥ गरुडा
स्त्राय पादकी॥ महिषा स्त्राय पादकी॥ गजा स्त्राय
पादकी॥ पशा स्त्राय पादकी॥ गिंहा स्त्राय पादकी॥
अंधान् अमाद्यवनद विमलं श्रीवृष्णय निविचु
पादकी॥ अंधान् अमाद्यवनद विमलं श्रीमहिष्य

लि विचु पादकी॥ अंधान् अमाद्यवनद विमलं
श्रीकामा लि विचु पादकी॥ अंधान् अमाद्यवनद
विमलं श्रीवेषु विविचु पादकी॥ अंधान् अमाद्य
वनद विमलं श्रीवा ना हि विचु पादकी॥ अंधान्
अमाद्यवनद विमलं श्रीने दाय धी विचु पादकी॥ अ
ंधान् अमाद्यवनद विमलं श्रीचा म्धु विचु पादकी॥

अंधाने अमाय वनद विमल श्री महा लक्ष्मी विचित्र
पादकी ॥ ॥ ॥ गाय पा नाराय धून ॐ
माल ऊआमका ॥ मंदल षठ कोन त्रिकाने
चार्य शंष अद्याहा ॥ वलि आदि न वाय लं
स्वन हाय ॥ चंन सिधन खान नय ॥ ना सिय ॥
नं आत्म न खाय स्वाहा ॥ कूं विद्या न खाय स्वाहा ॥

सों ४ जिव न खाय स्वाहा ॥ ॥ खान क (गम) आ
दा व नय ॥ गुन न म स्का न ॥ अख धु म धु ला कान
त्यादि ॥ अक न को या व नय ॥ ॐ अप स र्च नु ऊ य ह न
ह न वि ह स स्मि ना य ह न वि षु क ह न ॥ धन ध्य
नु भि वा रू या ॥ सों ४ अ म्ना य रु ट ॥ दिग स ह न ॥
ध व ऊ व म धु न उ य क ॥ ॐ वा खा धि प न य न म ॥
दिग स ॥ ॐ ला क पा ल खान म ॥ गं ग ध प न य न

म॥ ऊवस ॥ गुत्रुखानम ॥ खवस ॥ ॐ सुदेव गा
यनम ॥ दथुस ॥ प्राध्याय ॥ नंदस्ववेकासनेया
वसाइकाय ॥ क्लीं १५ नपाद गेयावसावन ॥ सां
५ स्ववेकासचालकावपिकाय ॥ योस ॥ सां ४ अ
मायसुठ ॥ नं अंगुखाहीनम ॥ क्लीं नकुनिहीन
म ॥ सां ४ मधुमाहीनम ॥ नं अनामिकाहीनम ॥
क्लीं कनिखाहीनम ॥ सां कलननपुखाहीनम ॥

नंददयायनम ॥ क्लीं भिनसखाहा ॥ सां ४ भिखा
येवाषठ ॥ नं कवचायसुं ॥ क्लीं नेनुनयायव
षठ ॥ सां ४ अमायसुठ ॥ ॥ गालथाय ॥ ॥
भंखे अद्यापूजा ॥ नं अग्निमधुनायनम ॥ हं सु
उमधुनायनम ॥ भंखस ॥ वं वत्रुधायनम ॥ स
साममधुनायनम ॥ ॥ लंखधनम ॥ थव ॥
मूलमंन ॥ विधीउलि ॥ षटंगपूजा ॥ शवाहना

दि ॥ धेनु मृदा दस यठ ॥ शंख मृदा दस यठ ॥
थल खन स क नाठ धे म हाय ॥ गभय गी न ॥ नुं नि
पूना द वी वि द्य ह कौं का भ ध्वनी धी म हि यो ॥ न
ना प चा द या न ॥ ॥ थ ना द व भ ठ ह्मा न ॥ म्
ल म नु ध सा ये ॥ ल ख न हा य दू ॥ अ म्मा य रु ठ ॥
थ म नु न के (ग ल गी न ॥ कूं क व चा य दू ॥ धे नु
मृदा मृ नी क ह ॥ म ह्मा म् दान ना क पू य ॥ म्

म अमृ न अमृ ना दू व अमृ न ध्व नि अमृ न व
वि धि अमृ न ॥ अव य र सा रू स ॥ खा हा ॥ नि कू ठ
मृ दान वा न ॥ मू लू पू लू नू प च न ह्मा य न म ॥
॥ गभय गी न धी न ॥ मू ल म नु १० ॥ ष ठ ग ॥ आ वा
ह ना दि ॥ धे नु धा नि मृ दा द ध य न ॥ ॥
गु नू न र्थ ह ॥ प न म गु नू न र्थ य मि न म ॥ प न
भ क्षी गु नू न र्थ या मि न म ॥ प न म चा र्थ गु नू न र्थ

यानम पूजयामिनम ॥ खगुत्रगर्थयामिन
म ॥ अर्थेयानपूजा ॥ अक्षत्रभक्त्यनम ॥ मं
धुलस ॥ नं अग्निमधुनायनम ॥ हं ह्यर्थमधु
लायनम ॥ धनामूनमनुदुर्वेधानं ॥ हं सामम
धुलायनम ॥ गूं सूं पूं सूं नूं पत्रह्नायनम ॥ म्
लमनुधरियां कुलि ॥ वेऊगोनपूजा ॥ शवाहनादि
॥ यानि मूडां दभयन् ॥ ॥ गुत्रगपनथवनि

वस ॥ पत्रमगुत्रगर्थयामिनम पूजयामिन
म ॥ पत्रमक्षी गुत्रगर्थयामिनम ॥ पत्रमाचार्य
गुत्रगर्थयामिनम ॥ खगुत्रगर्थयामिनम ॥
शस्त्रपूजा ॥ नं चन्दनपादकी ॥ कूं अक्षगपा
दकी ॥ सैं ॥ सिधुनपादकी ॥ नं माहनीपादकी ॥
कूं पृथ्वीपादकी ॥ सैं ॥ पादकी ॥ श्रीमहागिपुल्ल
दलनीपादकी ३ ॥ धनं वलि ॥ जानि मूडाशाय ॥

खड्ग दा पला ॥ धन साधन ॥ धव भिन भहा
य ॥ ओ धन भ कि कमला सनायनमः ॥ पंचप
गा सनायनमः ॥ निखंडा मुधुन खान जा दाव
आवाहन सायः ॥ ॐ ॐ ॐ महाप
मव नानु कि काव नानंद ॐ विगुहा
सर्व लुगाहि द मानने छ हि पन ॐ भव नी ॥ अ
स्मिन् यानि धि क ल २ खा हा ॥ ॥ धन ॥ वारा कः

मला हा हा च तु वा द्रु नि ला च ना पा धं कू भ ध ना चा
पं धन य नि भि वा ल ॐ ॥ धने पृथ्वी नमः ॥ ॐ
ॐ ॐ महा नि पुन स द नि ॐ हा गे च्छ २ ॐ हे नि
ॐ ॐ ह स नि हि गा ल व २ ॥ ॐ ह स नि च्छे दः
ल व २ ॥ अमु विष्णु न कृत् २ म म पूजा ग्व हान
ॐ अव ग ० ध अमु गी कृ ल रु ठ स न द ॥ स मः
स्वी कृ ल आ नी म् दा द भ य ॥ ॥ देव या के ख

दंगन न्यास याच ॥ मूलमंजन पृष्ठांशलि ३ ॥
मूत्रनगर्यध ३ ॥ मूत्राकं (ध) ॥ मूलमन्त्र श्री
महागिपुत्रसूक्त श्यापुनम अर्थ २ ॥ शोचम
निय २ ॥ स्नान २ ॥ अत्रिह्मा २ ॥ सिद्धन २ ॥ अंकन २ ॥
पृष्ठांश २ ॥ धूप २ ॥ दीप २ ॥ नैवेद्य २ ॥ पूजन शोच
मनीय २ ॥ गाम्बू २ ॥ रुल २ ॥ मूलमन्त्रनमिया

उलि ३ ॥ अगकान ॥ ह्रीं श्रीं यां रां लं वां भूं द्रों दों
क्लीं प्रं ४ स ४ वृं उर नय ४ कामध्वनी वा (ध) ह्यान
म ॥ पूजयामिनम गपयामिनम ॥ ह्रीं श्रीं धूं मां
हनाय ॥ कामध्वनिचापायनम ॥ ह्रीं श्रीं ह्रीं वसी
कलनाय कामध्वनी पाभयनम ॥ ह्रीं श्रीं कूं हूं
रनाय कामध्वनी अंकसायनम ४ ॥ ॥ अरुका

मिका नया दधु ॥ वलिविय ॥ वां वगु क नाथय
वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ अं अगिनीया वलिं गृह्ण २
स्वाहा ॥ अं अगपा लाय वलिं गृह्ण स्वाहा ॥ गं ग
धपु नय वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ सर्वथा ह न थान
म ॥ ॐ अं सर्वविधि क न थान सर्व ह न वलिं गृह्ण
२ स्वाहा ॥ आवाहन स्थापन चन्द नाक न पृथ
नम ॥ जानि मूर्धा दुर्धय न् ॥ ॥ रूल पृथ ना

वृन्ध पदी पने व द्यु नम ॥ मूल म न न जाप ॥
ॐ स्वाहा ॥ १०८ न् अं ॐ स्वाहा ॥ १०८ ॥ ॐ व
अ २ प गृहा ध स्वाहा ॥ मधुल दय के ॥ क ग्वल
दावा वाय हान च्छान नय ॥ आन ॥ ॥
धव नि न क मे या इ का गव ॥ न य ध ॥ क मा ॥ आ
वाहन न जा नामि न जा नामि वि स र्ज न ॥ पूजा चैव
न जा मि क म ध्य प ल म ध्य त्रि ॥ ॥ मधुल या

खानकायावचुय ॥ सकलं नीविद्यं धवनी का
य ॥ अहालमूद्रान् सलायुसधाद खानकाया
व वलिसनय ॥ ॥ धवहव समदलदयका
व निमालेनय ॥ ॥ नीमाले वासिनेनम ॥ सु
आद्ययाय ॥ पच्छिमं नृखानं नृमहा माया श्री
सिद्धिलक्ष्मीदेवी श्रीनिपुलसुदलिमुख्या दी
पदानाचन पूजा निमित्तिथं श्रीसुआय **अर्थन**

म ॥ पूर्यनम ॥ सावित्रीनम ॥ ७ ॥ ७ ॥ श्रीमनी
पुरुषाभिषा श्रीविषुदवनचाशना ॥ ७ ॥ ७ ॥

श्रीगणेशदेवनाया पूजायाय आचार्यन निर्वीवि
रिष्मामद्रुका ग्रन्थमद्रुका व देव्या हवन सासुल
नय पंचांग पंचाले पूजायाय धेययाय मालावः

॥ श्री गुरु नमः ॥ अथ ह्युद्धि । पृथिव्या भू
पृथु सविः ॥ सगलं च नृकुम्भादिवगा लं वाङ्
दं भक्तिः ॥ प्रसलनिकीलकं मम सर्वोत्तिष्ठ
सिद्धये ॥ आसनविनिर्थागः ॥ पृथिवी त्वया धृ
ता सा का दविर्त्तविष्णुना धृता त्वचक्षत्रचम
दवीं पविर्त्तुं कुरुवा सन । ॥ ओ धनं भक्तिरुम
लो सनाय नमः ॥ अथ सर्वनुयत्तना यत्तना

रुमिया यत्तना विष्णु कर्त्तुना न नस्य न्कञ्चि
वाङ्मुया ॥ गीर्द्धं श्रीमहाकाये कल्याणद
हनाय मा त्वेन वाय न मा त्वेन मे नृकुदा नृ
महसि ॥ ०० निवचनानां वामपात्रिद्या न
यस्य कृत्वा विष्णु निवा न हं विक्षय सञ्चादिन्या
सं कृत्वा न । पुन वस्य सविः ॥ वक्ष भक्तिन
सि । दवी गायत्री कुन्द मूर्ध्वपत्रमास्माद

वगाहनि नृवीरुगुय उं भकि पादथा म
कीलकैसवोणि ममसकैनाहि कृसिद्धयेसा
युयुविनिथाग ॥ अमुयरुदिमिमनुनदि
ग्वन्धन ॥ ॐ हर्तवः ॥ सुवनामिनि दिग्वन्धन ॥
मूलनप्राध्यामयय ॥ ॥ नयथध्यानी ॥
सहस्रुलपकः सकलजानलमिपेहवना

हयकनामूत विमलगधपूष्यामन ॥ यसन
वदनकभी सकनदवगानूपिन समनगिन
सिहसग मदिनपूर्वगुर् ॥ ॥ ॐ नृं द्रां
ध्रीं हसखरूं द्रां हसकमलवनयश्रीहस
कमलवनयउ हसकमलवनय ॐ श्री
श्रीपनपावक सर्वनाथ सर्वउद्धपनमथ

सर्व गुत्र लयं श्री गुत्र न ह सक म ल व न य
श न ह सक म ल व न यं तु न ह सक म ल व
न यं ॐ श्रीं सह सक म ल व न य ॐ सह सक म
ल व न यं तु सह सक म ल व न य श्रीं श्रीं स
ह स्व श्रीं श्रीं श्रीं नं ॐ ॥ न क श्रीं तु श्रीं श्रीं ॥
॥ ॐ नि म्म स्वा मान सा प चा न क श्रीं न ॥

सं पृथिव्या त्मकं गीर्णं समर्थयामि नमः ॥ हं श का
सा त्मकं पृथ्वी समर्थयामि नमः ॥ यं वा य्वा त्मकं
धूपं समर्थयामि नमः ॥ नं श त्मकं दीपं समः
र्थयामि नमः ॥ वं न सा त्मकं नेव पं समर्थयामि
नमः ॥ श्रीं श च म नी र्य स्वा हा नं ह्म श्रीं त्मकं गी
वृत्तं समर्थयामि नमः ॥ ॐ नि मान सा प चा नं

नमस्तुभ्यं मुनि कूर्यात् ॥ कर्त्तुं कान्तयिना कार्थ
लाका लाङ्गयिना तुङ्गिः ॥ सुगामा सुपयिना सुन
त्वभव भिवना पना नीलया हावना वृत्ति यत्न
नय निष्कनः ॥ नत्सर्वं नैव ज्ञान्यान् धर्मध
म्मेदिलक्ष्म ॥ प्रागः प्रहृति सायान् सायादिप्रा
गनं नमः ॥ यत्ननामिदं गनाथ नदमुनवपूज

न ॥ ॐ निमुत्वा ज्ञानपासं ल्यं कूर्यात् ॥ ॐ नय
यः सुर्थादि यमानयः ॥ यावत्सुर्थादियावधिः
उत्वा सनिः ॥ स्वासात्मकषट् सनाधिकभक्तवि
समिस्ताहर्षं ज्ञानपासं यथाषट् सगानि मु
लाक्षनचक्रिणः ॥ भाग्यशायन सकिंका
या सवाहना यसायुक्षयसपनिचा नायसा

लं काना य समर्थ यामि न मः॥ ॐ निवच नाग
मूला धना दिस ह द ल प र्थ नं अरु पा सं क ल्य
कू र्थ न॥ ग य थ ह र ॥ षट् स गानि ग (ध भ यः
षट् सह मा भि व द स विष्णु व षट् सह मा भि र्
ह व षट् सह प्र क् अ सम न क सह भ क् प न मा
सा सह स क् अरु पा च सह प्र क् गु न व च नि व

द य न॥ न व क् भ य अरु पा सं क ल्य वि ध य अ
रु पा षे द गं कू र्थ न॥ अथ ग्री अरु पा ग य ग्री म
नु स ह स अ पि ॥ सि न सि ॥ अ वि च क् ग य ग्री च्
न्द प्र ख प न म ह सा द व गा रु दि ह वा र्ग गु क्
स ॥ भ कि ॥ पा द था सा ह की ल क् सर्वा (ग म म
स क ला रि मृ मि द्रु (थे रु प वि नि था ग ॥ अ रु

काली नमः ॥ नवदुःखादि ॥ गनः ४ अर्चन ॥
 शोभुद्राय स्यात्ताका सुनगधरनिता सिद्धवि
 याधनाया सर्ववेनाति ४ समकावद्रुगेलविल
 सगुचद्रुसोचन्द्रसुख ॥ चिद्रुद्रोदमहर्त्तनिसिः
 चनविनसुत्यादयुग्मविमृष्टसोसोश्चधामह
 क्षामुनिगधविनसुसुसर्वहानानात्मा ४ ॥

199-1

199-1



ॐ निष्काला श्रुतपागमय गी यथा भक्तिवाल कथ
न ॥ ॐ क्रीं हंसः सा हं स्वाहा ॥ १०८ ॥ ॐ निष्कालि
त्वानि वयः । गुह्या नि गुह्य (गमपि त्वं गृहा धाम
त्वे नं रूपं । सिद्धिर्हव नु दवं सिद्धपं नु ह्यं कन
स्मि नं ॥ ॐ नि नि वयः ॥ मूला दिव फल न
धर्म मूल विद्या विरा वय न् । काटि ह्यर्थ सम

प्रदं चन्द्रकाटि सभा गलं उद्यदि वा कन धा गी
याव च्छा स दृक् स नं ॥ न वें विरा वा मूल विद्य
या षण् ग न्या स कू र्थो न गुं गु न् र्थान मः ॥ सि
व सि गंग धप न थ न मे ॥ द द्वा वा द्वा ॥ इ इ म
ध न मे ॥ वाम वा द्वा ॥ द्वा द्वा पा ला य न मः ॥ द
द्वा नु वें व नु का य न मः ॥ वाम नान् ॥ ख द्वा द्वा

वगाये नमः॥ रुदि॥ धर्मकृतसमूहं
ननालसुसाहनं बुध्याष्टदलं हनं पर्व
वैलाशकक्षिर्वं विक्राष्टकक्षिकामध्वनि
आश्रित्युपसृतं नो॥ नयथाध्वानं॥ अत्र
दिनक्षत्राभ्यादि॥ अथषष्ठः॥ अहं॥

वित्तमाधवया पूजास्ति यध्वमहं न हि कावयाय
पूजाविधिवत्॥ विगन्तुन (आध्वयं)॥
ॐ ह्रीं शान्तं नारायणं वन्दे॥ धनमः॥ ॐ वन्द्यं यश
नं॥ पादं॥ ॐ ह्रीं विशां नारायणं विष्णुं नमः॥
ॐ विश्वं नारायणं नमः॥ नाहि॥ ॐ ह्रीं शिवं नमः॥
यत्र दायनमः॥ ॐ नमः॥ अहं वायव्यं॥ सितं॥
सामं विलामं नयाय३॥ ॥ सूर्यार्चं॥ अत्र

समर्थ ॥ विष्णु मूल न न्यास ॥ अर्घ्य पात्र पूजा संख
स ॥ ॥ आत्म पूजा ॥ आसन ग ॥ आध्यामादि ग
त्रुण सनानं ॥ आन ॥ ॐ ह्रीं शुद्ध धन गदा चो
र्द्ध अर्ध ध्वज सव्यथा ॥ वाम था का म्बु पद्म के
मा धर्व नृक सनिहं ॐ निश्चान पूष्य नम ॥ मूल
नगु या ऊँ लि ३ लक्ष्मी सनख गी स ह हृदया ॥

दि ॥ मूल मन्त्र ॥ ॐ ह्रीं सनमाना नाय धाय वि
ध्वज मन्त्र ह्रीं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय ह्रीं
स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं वागाध्वनी ह्रीं स्वाहा ॥ ॥
थना गायत्री ॥ ॐ नन्ना नाय धाय विष्णु ह म हा
वीर्याय धी महि ॥ नन्ना विष्णु चादयान् ॥ ॐ वि
ध्वनूपाय विष्णु ह वाग्वि शुद्धाय धी महि ॥ नन्ना वा

[illegible]

कृष्ण

75

३ पाय व

५

वचनं यत्

हा ॥ ॥ ॥ २ श्री ३ निल माधवाय ॥ विष्णु
ध्यान ॥ पद्मी न्या पत्रि संस्थि न हिङ्ग ग ना माधव
हर्म हवि शं सर्व को मुह पाक्षि ना दुर्ग कूच कुंग
दा धात्रि गे न दूषा सं निरु दह व धूम च लं पी ना
नव नैतृ षष्ठ चाङ्गि मधु स वापि न मधू ह नै य धा
सदा माधव ॥ २ श्री दो मो न स नू पी व न व म ०

वपुः ॥ काल नू पी रु नी ये दे ह्या त्रि नो न सि हा व
सि व ल म थ ना या म द ग्नि ॥ ख नू प ॥ न ना भा
लं का वि दा नी वं सु ग न य व ना वा २ ॐ दू न मा
रु ग व न वा सु दे वा य स च्छ भ क्त्वा त्म नं न न ना
य न म ॥ ॥ न न न या म नु थ ॥ वि सु ख वा व ना थ
श्री श्री कृष्ण व ना ना द भ दि भ वि दि ना माध वा

ॐ दयाय शंभु कृपय २ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ विनस नकु
चाये २ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ विस्वाये मधु माये २ ॥ ॐ ह्रीं
नमः ॥ कवचाय श्रुनामिकाय २ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ नगा
ली कनि कृपय २ ॥ ॥ ॥ वेकु न्यास ॥ ॐ
ह्रीं वेकु ध्ये पूर्वकाय २ ॥ ॐ ह्रीं नृ सिंहाय दक्षि
ध्वे वक्राय २ ॥ ॐ ह्रीं कपिलाय पश्चिम वक्राय २ ॥

ॐ ह्रीं वला हाय उरु न वक्राय २ ॥ ॐ कंठं रं हं वे
ध नं याय २ ॥ मध्व ॥ श्रु न्यास ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ ह
दयाय २ ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ विनसं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥
विस्वाये वषट् ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ कवचाय ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं न
मः ॥ नगा ली वेषट् ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ दीपे पृथु श्रु माय
रूट् ॥ श्रु न नाथ पो न पूजयेन् ॥ श्रुत्वा पूजा ॥ ॥

२ अथ विष्णु देवार्चनं । गगान्यास ॥ ॐ क्लीं ह्रीं स ह्रीं दयार
 दिक् नमो न्यास ॥ ॥ पद्मासनाय २ ॥ गुन्दासना
 य २ ॥ गगन विद्या ऊर्लि ३ ॥ ॐ क्लीं नमो नाना नाय ध्याय
 क्लीं नमः ॥ स्वाहा ३ ॥ ॐ दं नै व श गृ क्लीं २ स्वाहा ॥ ॥
 मय गी ॥ ॐ क्लीं विष्णु वाय विष्णु ह नाना नाय ध्याय धी
 म ह नमो विष्णु प्र चो दयान् ॥ आप ॥ ॐ ३ क्लीं ॥ स्वाहा ॥

नाना नाय ध्याय मित्रादि ॥ ॥ अथ गन्धदि ॥ ६ ॥ ७ ॥

आगम्याथ

ॐ ५

ऊव स्वग १ श्री ३ विष्णु लसुद्र नीमूल स्वग स्वव
 नाना नाय ध ० ० ० नव आगम्य न
 नाना नाय ध ग (धम) ग (धम)
 सा श्री गमन श्री ३ श्री ३

श्रीसिखाखण्ड

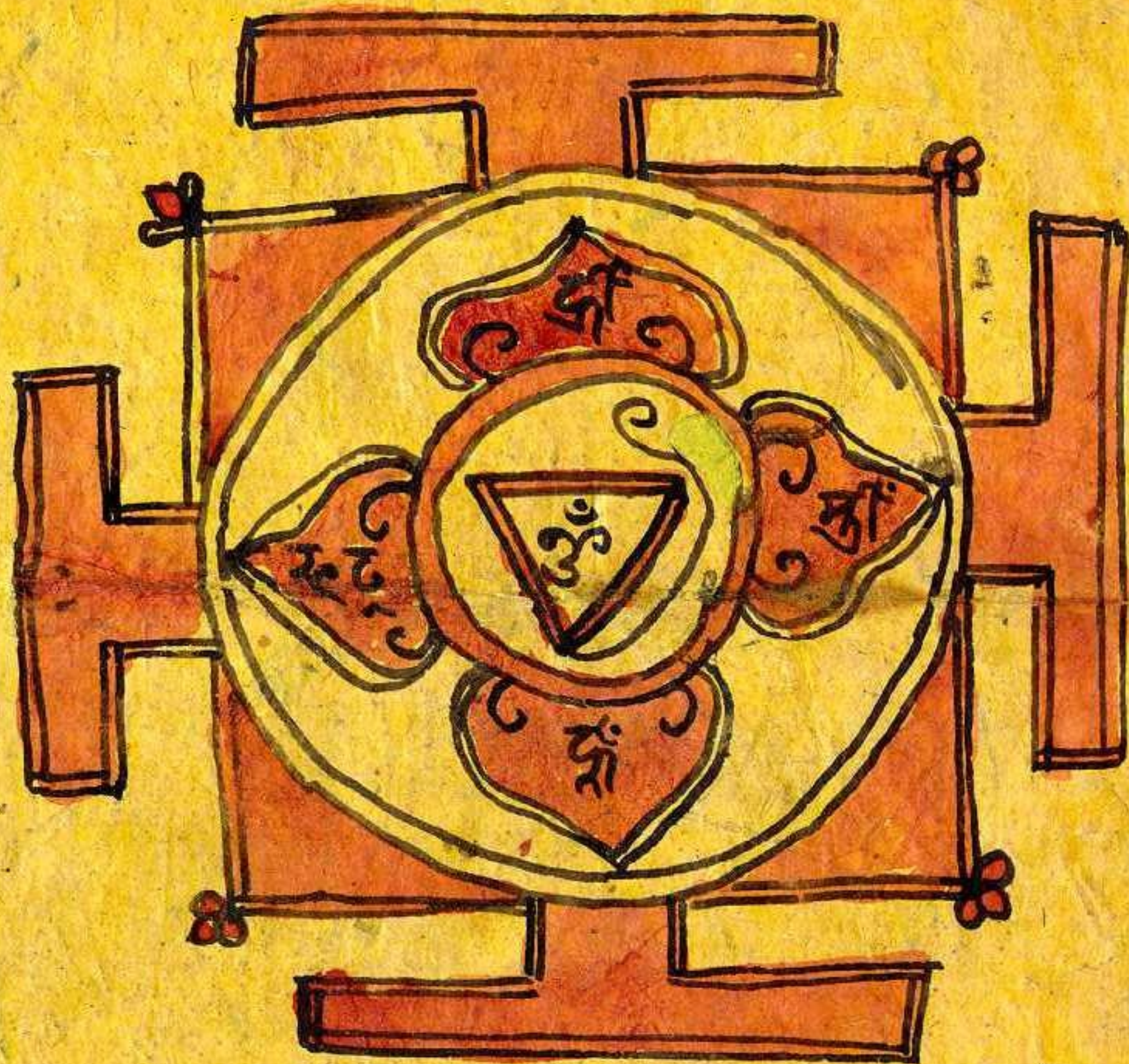
हेनवयाङ्कथ



श्रीशिवपूज्ये नमः ॐ नमः



श्रीउगतावायाउरुध



खलचक्रपादवसिष्ठकौशिकय ॥ ७ ॥ ७ ॥

दां



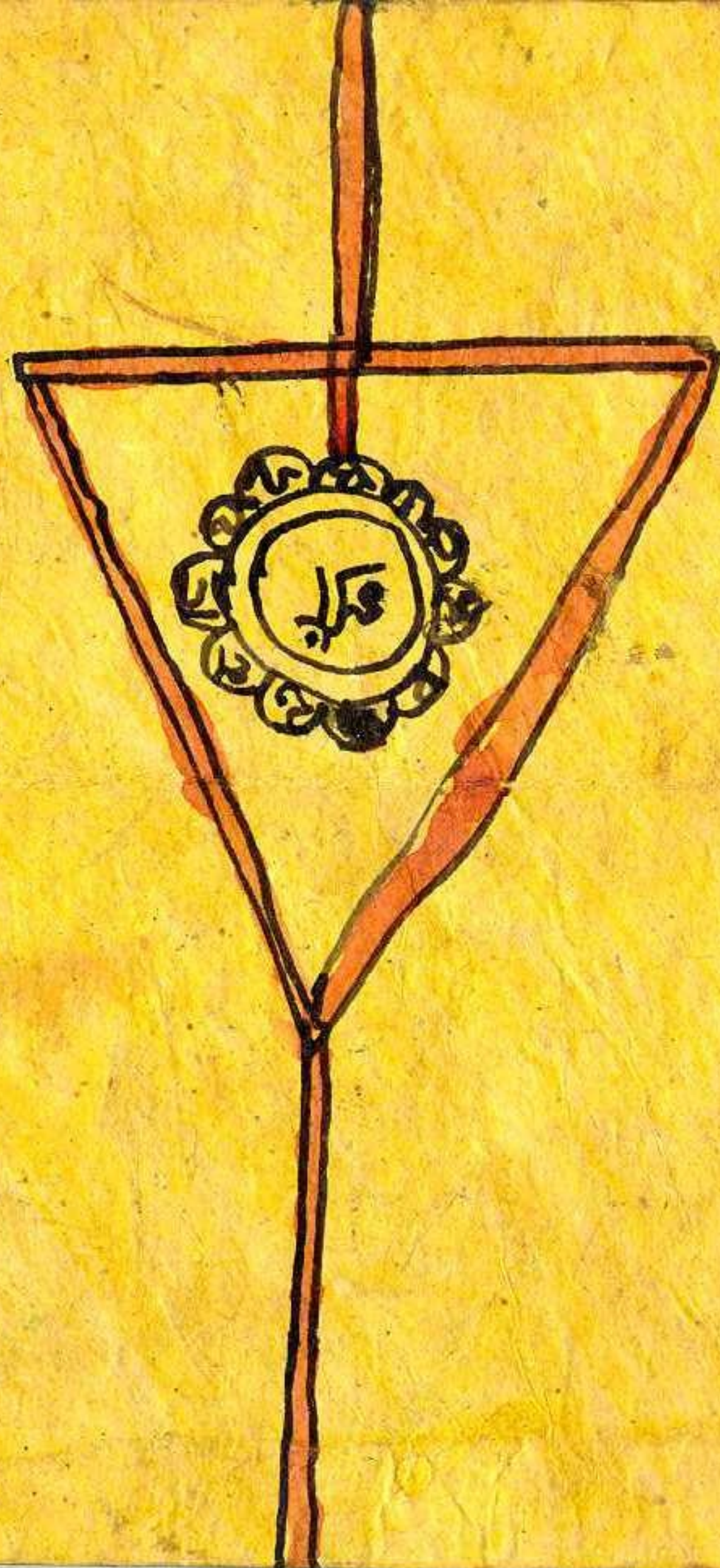
उधनार्जय
मुक् नकावनक्ष

उल्लूनाय
नीलवर्ण
त्र



पञ्चिर्मानाय
हनिवर्ण

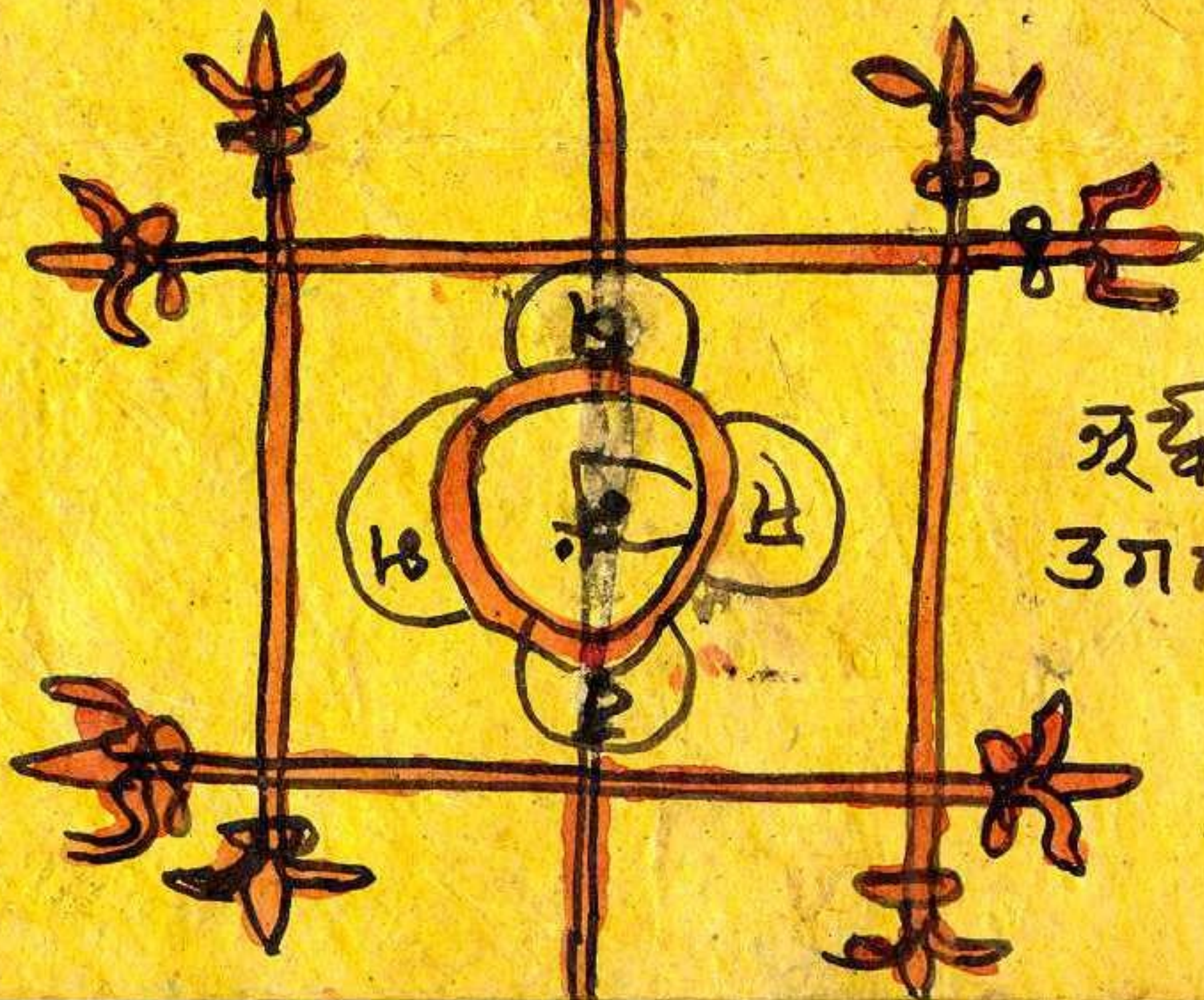




दक्षिणाय
नकावलक्ष



पूर्वनाथ
शुक्लवर्ण



शुद्धनाथ
उगताना

उगतायाईरुथ

५६

५६

५६

५६

५६

वसुकेलव

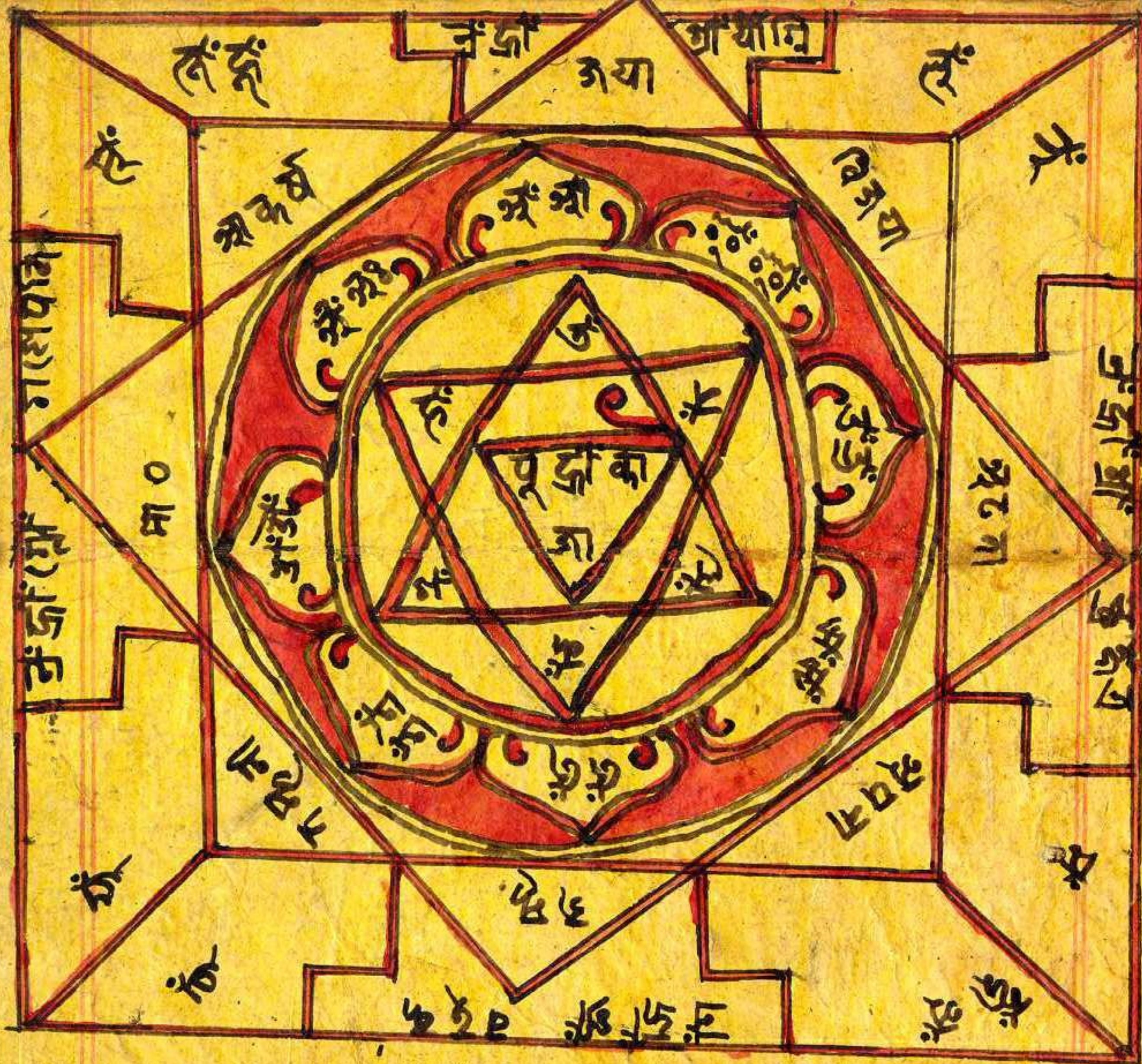
कुरुल

गथपति

पञ्चम



ॐ कृष्णकायां त्रैलोक्यं पद्मिनामयं



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सना ॐ

मगपुजायां यज
मगपुजायां यज



वलि



प्र

मंख



अर्थहा



अर्थपाठ

आचार्यचान्-वाफ् हा चान्-उज्मानचान